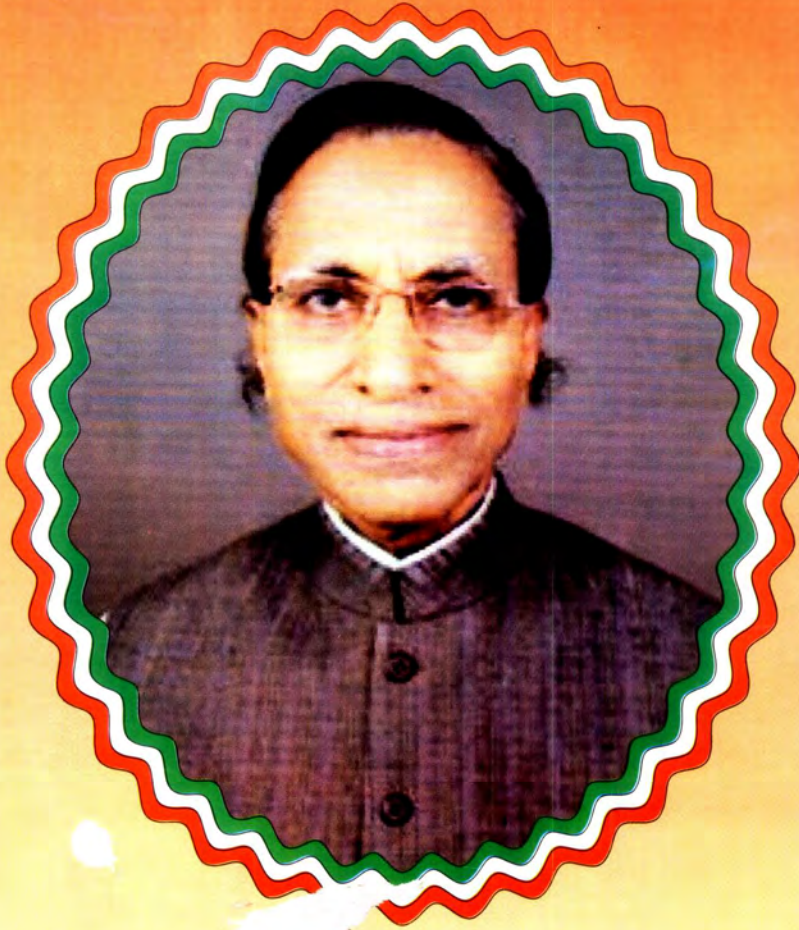




आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र अक्टूबर 2017 (प्रथम)



महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी (पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार)

को मेघालय के राज्यपाल बनने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हार्दिक बधाई।



सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118

विक्रम संवत् 2074

दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की मुख-पत्रिका

वर्ष 13

अंक 17

सम्पादक :

उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में

वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में

वार्षिक शुल्क 100 डॉलर

आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,

गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सम्पर्क सूत्र-

चलभाष : 89013 87993

कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका आर्य प्रतिनिधि

अक्तूबर, 2017 (प्रथम)

1 से 15 अक्तूबर, 2017 तक

इस अंक में....

- | | |
|---|----|
| 1. भारतीयता में पितृयज्ञ | 2 |
| 2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी | 3 |
| 3. महर्षि दयानन्द का धर्म सन्देश | 4 |
| 4. एक और विघटनकारी सोच | 5 |
| 5. धैर्य | 6 |
| 6. वित्तमंत्री ने किया अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ | 7 |
| 7. महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस-दीपावली | 8 |
| 8. आत्मा की आवाज | 9 |
| 9. स्वास्थ्य चर्चा—मधुमेह (Sugar) | 11 |
| 10. महर्षि दयानन्द का पाचक जगन्नाथ से वार्तालाप | 11 |
| 11. महर्षि के उपकार | 11 |
| 12. योगदर्शन का अध्यापन | 12 |
| 13. समाचार-प्रभाग | 14 |

सूचना

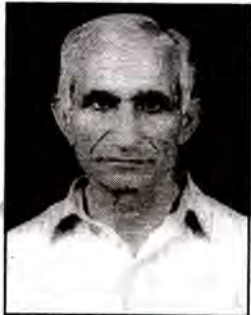
सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

**सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001**

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

Website : www.apsharyana.org

भारतीयता में पितृयज्ञ



संस्कृति शब्द का एक अर्थ— निखारने वाला भी है। हमारी संस्कृति और हमारे शास्त्रों ने आज इस समय जो हम कर रहे हैं उसको पितृयज्ञ, पितृ-स्मरण का नाम दिया है।

इस संसार में प्राणियों के आने-जाने का चक्र प्रवाह रूप में नित्य चलता रहता है। यहां हम अपने-अपने कर्मानुसार न जाने कितनी बार कितने रूपों में आए। उन्हीं में एक अवसर यह है। जिसमें हमें नरतन के साथ शतशः—सहस्रशः प्राकृतिक पदार्थ प्राप्त हुए हैं। ये हमारे लिए कितने उपयोगी हैं, यह हमारा प्रतिदिन का जीवन स्वतः बता रहा है। इनके लिए हम अनेक के कृतज्ञ हैं। इन देनों के लिए सर्वप्रथम हम जहां मूल रूप में ईश्वर के कृतज्ञ हैं, वहां दूसरों के सहयोग को भी भुलाया नहीं जा सकता।

हमारा जीवन अपनी-अपनी वंशपरम्परा की एक कड़ी है। पिता-पुत्र-पौत्र रूप में यह आगे से आगे चलती है। यही इसकी अमरता का एक रूप है। प्रत्येक में जीने की इच्छा की तरह संतान की चाहना भी स्वाभाविक है। तभी तो सन्तान से किसी की खुशियां दुगनी हो जाती हैं। वह हर तरह का कारोबार तब उत्साह से करता है।

पितृयज्ञ—पालन के कारण किसी को पिता शब्द से पुकारा जाता है। पालन के अनेक अंग हैं, जैसे कि भोजन, वस्त्र, भवन, शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा आदि। जो जिस किसी ढंग से पालन में सहायक बनता है, शास्त्र उसको पिता कहते हैं और यज्ञ=कर्तव्य कर्म। अतः अपना पालन करने वालों के प्रति सन्तानों, शिष्यों, प्रजाओं का जो कर्तव्य है, वह ही पितृयज्ञ है।

मनुस्मृति ने इसकी प्रक्रिया बताते हुए कहा है—हमें अपने पूज्य पितरों की भोजन, वस्त्र, हर प्रकार की सुविधा और सम्मान देकर सेवा करनी चाहिए। तभी उनसे सच्चे अर्थों में दिल से जुड़ी प्रीति, आशीर्वाद, सुझाव आदि प्राप्त किया जा सकता है। यह सब जीवित स्थिति में ही हो सकता है। जब जागे तभी सवेरा के अनुसार वे सौभाग्यशाली

□ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

हैं। जिनको समझ आ गई कि माता-पिता-गुरुजनों जैसों के सम्मान, सेवा, आज्ञा पालन में ही सब कुछ छिपा है। यदि किसी के अब दोनों या कोई एक उपस्थित है तो दिल से उनकी सेवा करनी चाहिए। इसके अभाव में किसी रिश्तेदार या परिचित का कम से कम आज सम्मान करना चाहिए।

पितृस्मरण—अर्थात् अपनों की याद—मनुष्य एक विचारशील एक-दूसरे के सहारे पर पनपने-जीने वाला सामाजिक प्राणी है। वह समाज से ही सारी सुविधाओं को प्राप्त करता है। समाज की प्रथम ईकाई, परिवार का यदि किसी को सहयोग प्राप्त न हो, तो उसका जीवन दूभर हो जाए। समाज में सबसे अधिक सर्वविध सहयोग माता-पिता-गुरु आदि से प्राप्त होता है। अतः एव प्रत्येक यह चाहता है कि इनकी यह कृपा सदा इसी तरह बनी रहे जिससे यह सहयोग मिलता रहे। परन्तु प्रकृति के नियम के अनुसार या और किसी कारण से भी हमें उनका वियोग सहना पड़ता है।

प्रत्येक विचारशील कभी न कभी अपने पूजनीयों के सहयोग को अनुभव करता है। इस कृतज्ञता को चरितार्थ करने की इच्छा रखने वालों के लिए अब यह एक सरल मार्ग है कि अपने परिवार की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए यत्नशील हों।

अपनी सन्तान के निर्माण में भरपूर सहयोग देकर जहां मानसिक सन्तोष प्राप्त करें, वहां अपने पितृकृत्य से भी मुक्त हों। हां, यह एक महत्त्व की बात है कि हम अपनी सन्तान को योग्य, नेक बनाकर जहां बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं वहां परिवार की परम्परा को भी सुरक्षित करते हैं। इसके लिए अपनी सन्तान को सार्थक सच्चाई पर चलने की ही प्रेरणा दें। रिवाज के नाम पर व्यर्थ पचड़ों में न डालें और न ही निरर्थक लकीरें पीटने वाली ही बातें हों। विज्ञान की तरह सार्थक बातें ही करके जीवन को सफल करें।

इस कृतज्ञता को सफल करने का एक रूप यह भी है कि समझदार होने पर हम अपने पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों को सद्भाव-सहानुभूति-सहयोग के साथ निभायें। मतभेद की स्थिति में भी विरोध और शत्रुता को न पालें।

क्रमशः पृष्ठ 13 पर.....

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

□ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक



गतांक से आगे....

प्रश्न 712. विदेश गमन और देशाटन से क्या-क्या लाभ हैं ?

उत्तर—स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने दशम समुल्लास में देशाटन के लोगों का इस प्रकार वर्णन किया है—जो मनुष्य देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में आने जाने में शंका नहीं करते, वे देश-देशान्तर के अनेकविध मनुष्यों के समागम, रीति-भाति देखने से, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय, शूरवीर होने और अच्छे व्यवहार का ग्रहण, बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर होके, बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। भला, जो महाभ्रष्ट, म्लेच्छ कुलोत्पन्न वेश्या आदि के समागम से आचारभ्रष्ट, धर्महीन नहीं होते, किन्तु देश-देशान्तर के उत्तम पुरुषों के साथ समागम में छूत और दोष मानते हैं। यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो क्या है ?

प्रश्न 713. विदेश गमन में क्या त्याज्य (छोड़ने योग्य) है ?

उत्तर—जो लोग मांसभक्षण और मद्यपान करते हैं, उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं। इसलिए उनके संग करने से आर्यों को भी ये कुलक्षण न लग जायें, यह तो ठीक है। परन्तु इनके व्यवहार और गुणग्रहण करने में कोई भी दोष वा पाप नहीं है, किन्तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें तो कुछ भी हानि नहीं। जो इनके स्पर्श और देखने से ही मूर्खजन पाप गिनते हैं, इसी से वे उनसे युद्ध कभी नहीं कर सकते क्योंकि युद्ध में उनको देखना और स्पर्श होना अवश्य है।

प्रश्न 714. सज्जन लोगों का परदेशगमन में उत्तम आचार क्या है ?

उत्तर—सज्जन लोगों को राग-द्वेष, अन्याय, मिथ्या-भाषणादि दोषों को छोड़, निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनतादि का धारण करना उत्तम आचार है। और यह भी समझ लें कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है। जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। क्या बिना

देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य वा व्यापार किये बिना स्वदेश की उन्नति कभी भी हो सकती है ? जब स्वदेश में ही केवल स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी हमारे देश में व्यवहार वा राज्य करें तो सिवाय दारिद्र्य और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

प्रश्न 715. पाखण्डी लोग देश-देशान्तर में जाने की आज्ञा क्यों नहीं देते ?

उत्तर—पाखण्डी लोग यह समझते हैं कि जो हम इनको विद्या पढ़ावेंगे और देश-देशान्तर में जाने की आज्ञा देंगे तो इनके बुद्धिमान् होकर हमारे पाखण्ड जाल में न फंसने से हमारी प्रतिष्ठा और जीविका नष्ट हो जावेगी। इसीलिए भोजन छादन में बखेड़ा डालते हैं कि वे दूसरे देश में न जा सकें। हां, इतना अवश्य चाहिए कि मद्य-मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें।

प्रश्न 716. युद्ध समय में विजय और पराजय किसे कहते हैं ?

उत्तर—सब बुद्धिमानों ने क्या यह निश्चय नहीं किया है कि जो राजपुरुषों में युद्ध समय में भी चौका लगाकर रसोई बनाकर खाना अवश्य पराजय का हेतु है ? किन्तु क्षत्रिय लोगों का युद्ध में एक हाथ से रोटी खाते, जल पीते जाना और दूसरे हाथ से शत्रुओं को घोड़े, हाथी, रथ पर चढ़ व पैदल होके मारते जाना और अपना विजय करना ही आचार तथा पराजित होना अनाचार है। इसी मूढता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते, विरोध करते-कराते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगा दिया और हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें, परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देशभर में चौका लगाके सब कुछ सर्वथा नष्ट कर दिया है।

हां, जहां भोजन करें उस स्थान को धोने, लेपन करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा-कर्कट दूर करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। मुसलमान व ईसाइयों के समान भ्रष्ट पाकशाला न करनी चाहिए, न रखनी चाहिए।

क्रमशः अगले अंक में.....

महर्षि दयानन्द का धर्मसन्देश

—डॉ० जगदेव विद्यालंकार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) 667-ए/29 तिलक नगर, रोहतक

जब आर्यजाति अनेक प्रकार की कुरीतियों में पड़ी जर्जर हो रही थी, भारतीय संस्कृति जब विदेशियों के पादाक्रान्त हो अन्तिम सांस ले रही थी, अंग्रेजी साम्राज्य का प्रकाण्ड सूर्य जब भारतीय गगन मण्डल पर तीव्र ताप से तमतमा रहा था, भारत माता पराधीनता की विकट बेड़ियों में जकड़ी हुई सिसक रही थी, तब वेदज्ञाता, गोत्राता, नारी जाति के समुन्नायक, सच्चे शिव के पुजारी एवं माँ भारती के वीर सपूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस भूमण्डल पर अवतरित हुए।

शिवलिंग पर चढ़े नैवेद्य को खाते हुए और मलमूत्र कर उत्पात मचाते हुए चूहे को देखकर उनका बालक मन संसार से विरक्त और सच्चे शिव का जिज्ञासु हो उठा था, रही सही कसर बहन और चाचा की असामयिक मृत्यु ने पूरी कर दी और मूलशंकर के मन को झकझोर दिया तब यौवन काल के प्रारम्भ में ही धनधान्य से आपूरित पिता के घर को त्याग कर और हिमालय की गहन कन्दराओं में दर-दर की ठोकें खाने के बाद मथुरा में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी दण्डी से वेद और व्याकरण की शिक्षा प्राप्त करके गुरु से वेदोद्धार और समाज-सुधार का आशीर्वाद लेकर जब स्वामी दयानन्द ने कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया तब उन्होंने देखा कि संसार के अनेक मत एवं सम्प्रदायों ने बुद्धिवाद को तिलाञ्जलि देकर 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' दुन्दुभि चहुंओर बजा रखी है। धर्म का समुचित अर्थ न समझकर जैन, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, शैव, वैष्णव, शाक्त आदि नाना मतों का जाल फैलाकर अपना-अपना राग अलाप रहे हैं और मानव समाज को पथभ्रष्ट करके खण्ड-खण्ड कर दिया है। ऐसे विकट समय में स्वामी जी ने वेदों के प्रति भ्रान्त धारणाओं और वेदमन्त्रों के किए हुए अनर्थों का निराकरण करके भूली-भटकी जनता को वेदों का उचित अर्थ समझाया।

'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि "विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर

सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।' मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।" वे आगे लिखते हैं, "सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।" उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द सत्य को धर्म और असत्य को अधर्म मानते थे। शास्त्र भी इस बात की पुष्टि करता है—'न हि सत्यात् परो धर्मः नानृतात् पालकं महत्' अर्थात् सत्य बड़ा कोई धर्म और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं होता। मानव का कल्याण सत्य पर ही टिका हुआ है। महर्षि दयानन्द के मतानुसार मनुष्य का धर्म एक ही होता है अनेक नहीं हो सकते। संसार में प्रचलित जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, हिन्दू, सिक्ख आदि धर्म नहीं मत या सम्प्रदाय कहे जा सकते हैं। वे एक स्थान पर लिखते हैं, "मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

वैचारिक धरातल पर बटे हुए और बिखरे हुए समस्त मानव-समाज को महर्षि दयानन्द मिलाना चाहते थे। उनका कथन है—"मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगों को मिलाना है। सकल समुदायों को एकता में लाना है। मैं चाहता हूँ कि कोल-भील से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त सब में एक ही जातीय जीवन की जागृति हो चारों वर्णों के लोग एक दूसरे को अंग-अंगी समझें।" स्वामी दयानन्द धर्म संस्थापक नहीं अपितु विलुप्त धर्म के अन्वेषक और उद्धारक थे। लोगों के कल्याण के लिए स्वामी जी ने 10 अप्रैल 1875 को आर्यसमाज की स्थापना की और लोगों की मिथ्या भ्रान्तियों का निराकरण करते हुए कहा कि मैंने कोई नया पंथ चलाकर गुरुगद्दी वा मठ नहीं बनाया है। मैं तो लोगों को मतवादियों के मठों से स्वतन्त्र करना चाहता हूँ।

क्रमशः पृष्ठ 13 पर.....

एक और विघटनकारी सोच

□ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

जातिवाद की भावना राष्ट्र की उन्नति, शान्ति में बड़ी बाधा रही है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द



ने शास्त्रों के आधार पर, स्वर्णिम इतिहास के आधार पर जातिवाद के अनौचित्य पर प्रकाश डालकर कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया। आर्यसमाज जैसी निष्पक्षता क्या होगी

ब्राह्मण कुल में जन्मे उपदेशकों ने तथाकथित ब्राह्मणवाद का खण्डन किया तथा उपदेशकों ने अपने से इतर वर्णों की गौरवगाथा को गाया। जन्म से जाति मानने में जहां वर्गभेद को द्वेषरूप में बढ़ावा मिलता है, वही आचार भ्रष्ट होकर वर्णसंकरता भी फैलती है। वर्तमान में ऐसी विघटनकारी सोच समाज में फैल रही है, जिसमें अपने आपको जन्म से ही ब्राह्मण मानने वाले भाई रावण को ब्राह्मण कहकर उसका महिमामण्डन करने पर तुले हैं।

इससे तो यही होगा कि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने वाले राक्षसी कर्म करने वाले व्यक्ति को भी ये महिमामण्डित करेंगे। ऐसे विचारों ने ब्राह्मणों को यज्ञ, विद्या आदि से च्युत किया तथा जातीय द्वेष को जन्म दिया। ऐसे लोग यह ध्यान दें कि उस समय की वर्णव्यवस्था के अनुसार रावण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कुछ भी नहीं था, अपितु मनुष्य न होकर राक्षस था, जो मानव जाति में निकृष्ट कोटि है।

आज विडम्बना की बात कि ब्राह्मण स्वयं अपने घाती व आततायी को महामण्डित कर रहे हैं। रावण के आश्रय में ही ताटका आदि राक्षसी-राक्षस ब्राह्मण, गो, यज्ञ का विध्वंस कर रहे थे। शूर्पनखा के आक्रोश के बाद खर ने जो चौदह राक्षस श्रीराम के प्राणहरण के लिए भेजे उनके विषय में महर्षि वाल्मीकि उन्हें ब्रह्मघाताः (ब्रह्मघाती) लिखते हैं। खर को श्रीराम निरपराध तपस्वियों को मारने वाला कहते हैं। खर को सीधे तौर पर

‘ब्राह्मणकण्डक’ ब्राह्मणों के द्वेषी कहते हैं। मारीच जैसे रावण के सेवक रावण को ‘राक्षसराज’ कहते हैं। वीर ब्रह्मचारी हनुमान जब देवी सीता की खोज में राजभवन में प्रवेश करता है तो मद्य के नशे में अनेक स्त्रियों से क्रीड़ा के पश्चात् सोते हुए रावण को देखते हैं। न केवल देवी सीता का अपहरण करता है, अपितु हर प्रकार से उसे भयभीत करता है। स्वयं राक्षसराज कहलाने वाले रावण को कुछ ब्राह्मणों द्वारा महिमामण्डित करना कितना विडम्बना पूर्ण है। यह उन मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के प्रति भी महाकृतघ्नता है जो ब्राह्मणों की रक्षा के लिए राक्षसों का संहार करते हैं। तपस्वी श्रीराम को कहते हैं—

सोऽयं ब्राह्मणभूयिष्ठो वानप्रस्थगणो महान्।

त्वन्नाथोऽनाथवद्राम राक्षसैर्बाध्यते भृशम्॥

अर्थात् हे राम! आप जैसे रक्षक के होते हुए भी यह ब्राह्मणकुल वानप्रस्थियों का दल, अनाथों के समान राक्षसों के द्वारा मारा जा रहा है। देवी सीता जब श्रीराम को ऐसा करने से रोकती है तो श्रीराम कहते हैं—“मैं अपने प्राण त्याग सकता हूँ, लक्ष्मण सहित तुम्हें छोड़ सकता हूँ, परन्तु अपनी प्रतिज्ञा को, विशेषकर उस प्रतिज्ञा को जो ब्राह्मणों के समक्ष की है, कभी नहीं छोड़ सकता।”

अतः यह कैसी सोच है कि जो रावण को ब्राह्मण बताकर महिमामण्डित करके कृतघ्नता व पाप को बढ़ावा दे रही है। इसी भांति यह भी विडम्बना है कि वाल्मीकि का नाम लेने वाले अनेक ऐसे मिलेंगे जो श्रीराम को आदर्श नहीं मानते। ये सब अच्छाई से दूर जाने व बुराई को अपनाने के रास्ते हैं। रावण को सबसे बड़ा विद्वान् बताने वालों को क्या उस समय के ऋषि अगस्त्य, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, वशिष्ठ, शृंग आदि महाविद्वान् नहीं दिखाई देते ?

संपर्क-निदेशक, आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत

धैर्य

□ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जीएच 53 सैक्टर-20, पंचकुला 09467608686

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य के जीवन का अत्यन्त आवश्यक गुण है जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है। वेद भगवान् ने भी अधीरता और क्रोध को त्यागकर धैर्यवान् सहनशील बनने का आदेश देते हुए कहा-‘अहमस्मि महमानः’ (अथर्व० 12.1.54) अरे मैं तो अत्यन्त धैर्यवान् सहनशील हूँ। अत्यन्त विपरीत या विषम परिस्थितियों में भी सामञ्जस्य बैठकर समभाव बनाकर मुस्कराते रहना ही धैर्यवान् होना कहलाता है।

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते समय भी योगियों के लिए स्थितप्रज्ञ होकर धैर्यवान् होना एक आवश्यक लक्षण बताया है। जो सुख में इतराये नहीं, विपत्ति में घबराये नहीं और प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में समभाव बना रहकर उस स्थिति का सामना करे वही धैर्यवान् जीवन में सफलता पा सकता है। जो व्यक्ति सुख के समय उसके अभिमान में इतरा गया उसका सुख क्षणिक होता है और यदि विपत्ति के समय घबरा गया तो वह मुसीबत पहाड़ बन जाती है और व्यक्ति उस कष्ट में टूट जाता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षण लिखते समय धैर्य को धर्म का लक्षण बताया और वेद भगवान् ने भी धैर्यवान्, सहनशील होने का आदेश दिया।

गुरु वसिष्ठ ने धैर्य का सुन्दर उदाहरण देते हुए कहा-“राज्याभिषेक के लिए बुलाए गए और वन के लिए विदा किए गए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मुख के आकार में कोई अंतर नहीं देखा।” इसे कहते हैं धैर्य। योगेश्वर कृष्ण पर कैसे-कैसे संकट आये, कंस के अत्याचार, जरासंध के प्रहार, शिशुपाल के दुर्वचन परन्तु वह सच्चे योगी की भांति सदैव शान्त भाव से मुस्कराते रहे। आधुनिक काल में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर ईंट-पत्थर फेंके गए, अनेक बार विष दिया

गया, लांछन लगाए गए परन्तु वह सब कुछ सहते हुए अत्यन्त धैर्य के साथ मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे।

शायद यही धैर्य ही इन सभी में वह समान गुण था जिसके कारण वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे और अपने कार्यों विचारों से अमर होकर हम सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर गए।

धैर्यवान् सहनशील व्यक्ति के लिए जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं ऐसा कहते हुए नीतिशास्त्र में सुंदर वर्णन किया है, “जिसके हृदय में जल के समान शीतल समुद्र छोटी-सी नदी सा मेरु पर्वत पत्थर के खण्ड समान, सिंह हिरण के समान, सर्प पुष्पों का हार और विष अमृत के समान हो जाता है शान्त रहने और धैर्य रखने से व्यक्ति हर कठिनाई पर विजय पा सकता है इसीलिए कहा गया अच्छे श्रोता बनो, धैर्य से सुनो, लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है। धैर्य सब प्रसन्नताओं व शक्तियों का मूल तत्त्व है। जिसके पास धैर्य संयम सहनशीलता है वह जो इच्छा करे प्राप्त कर सकता है। धैर्य को कमजोरी व मजबूरी समझने वाले मूर्ख होते हैं।

सहनशीलता तो वीरता का गुण है। अधीर जल्दबाज मनुष्य मुंह के बल गिर पड़ते हैं जबकि धैर्यवान् सदा लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करते हैं। संयम धैर्य का रास्ता दर्द से भरा होता है परन्तु उसकी मंजिल सदैव सुखदायी होती है। धैर्य और सन्तुष्टि जीवन नौका की वह पतवारें हैं जो उसे भवसागर के हर भंवर से निकालकर मंजिल तक ले जाती है। विचारों के कारण उपस्थित होने पर भी जिसके मन में विकार उत्पन्न नहीं होते वह धैर्यवान् है। धैर्य और मेहनत से वह कुछ पाया जा सकता है जो शक्ति और शीघ्रता से नहीं मिल सकता। इसीलिए हम मनुष्यों को धर्म के लक्षण, वेद के आदेश और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धैर्य संयम सहनशीलता को अपने जीवन में धारण करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।”

वित्तमंत्री ने किया अभूतपूर्व अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ

बोले : वेदों में है ज्ञान का भण्डार, अभी और शोध करने की जरूरत



सर्व कल्याण धर्मार्थ न्यास पानीपत के तत्त्वावधान में आयोजित वर्षपर्यन्त अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ दिनांक 1.10.17 को वित्तमंत्री कै० अभिमन्यु जी द्वारा आर्य समाज बसई (गुरुग्राम) में किया गया। सभाध्यक्ष पूज्यपाद आचार्य ज्ञानेश्वर जी रहे। आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने सम्बोधन में यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पधारे कै० अभिमन्यु जी ने कहा कि हमारे वेदों में ज्ञान का भण्डार है। एक-एक वेदमंत्र में क्या-क्या भाव हो सकते हैं, उन पर अनुसंधान करने की आवश्यकता है। वेदों के बल पर भारत फिर से विश्वगुरु बन सकता है। उन्होंने यज्ञ पर अपनी आहुति डाली। उन्होंने कहा कि यज्ञ से बढ़कर कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। यज्ञ मार्ग पर चलकर जीवन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की जा सकती है। अभी तो भारत वर्ष ने योग और आयुर्वेद का जरा-सा अंश विश्व को दिखाया है। इसके अध्याय आने अभी शेष हैं। योग दुनिया में चरम पर है, परन्तु इसे हमें और उत्कर्ष तक पहुँचा सकते हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय आयुर्वेद में बहुत ताकत है, जो स्वामी रामदेव ने कर दिखाया। स्वामी रामदेव ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ मुकाबला किया।

इस अवसर पर पटौदी हरि मंदिर आश्रम के महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण प्रदूषण से चिंतित है। पर्यावरण प्रदूषण का शुद्धिकरण केवल हवन-यज्ञ से सम्भव है।

इस अवसर पर योग शिक्षक श्री शिवकृष्ण आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' यज्ञ करना सबसे श्रेष्ठ कर्म है। उन्होंने बताया कि कैप्टन अभिमन्यु जी की रोहतक स्थित सिन्धु भवन में बनी यज्ञशाला में प्रतिदिन दोनों समय पूरा परिवार सामूहिक रूप से हवन यज्ञ करते हैं। यह कार्य बताता है कि यह परिवार यज्ञ के प्रति कितनी आस्था व श्रद्धा रखता है।

अन्त में संस्था के अध्यक्ष श्री महात्मा वेदपाल आर्य ने इस शुभारम्भ पर पधारे मुख्य अतिथि कै० अभिमन्यु जी, सभाध्यक्ष पूज्यपाद आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य धर्मदेव जी, सभी सहयोगियों व बाहर से आये हुए यज्ञप्रेमियों का आभार एवं धन्यवाद किया।
—सत्यवान आर्य सभा—सह—कार्यालयाधीक्षक

सूचना

सभी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों को सूचित किया जाता है कि अपनी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान अपने विज्ञापन आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका में देकर लाभ उठाएं। इस पत्रिका के हजारों पाठक हैं तथा देश के विभिन्न राज्यों में इसका प्रचार-प्रसार है।

विज्ञापन शुल्क

पूरा पृष्ठ रंगीन एक अंक का शुल्क 5000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

1/4 पृष्ठ का शुल्क 2000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

1/2 पृष्ठ का शुल्क 3000/- रुपये —प्रबन्धक

महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस-दीपावली

□ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

लाखों दीये न कर पाए अंधेरों में उजाला,
एक चिराग था बुझकर हमें रोशन कर गया।



जिस दिन दुनिया दीपावली पर्व मना रही थी आर्यों का एक दीप बुझ गया परन्तु जाते-जाते उसने उन अंधेरी गलियों में भी प्रकाश कर दिया जहाँ दुनिया अज्ञानता के अंधेरे में कहीं खो गई थी। लोग वेद का नाम भी भूल रहे थे। वैदिक धर्म क्या है? कोई नहीं जानता था। उल्टे वेद के लिए भ्रमित अर्थ कर उनमें जनता में हीनभावना भर रहे थे। वेद में गडरियों के गीत बताते थे। सायण, महीधर, उव्वट आदि ने वेद के अनेक मंत्रों के अर्थ असत्य रूप से लिख दिए। मैक्समूलर साहब द्वारा भी अर्थ का अनर्थ किया गया। फिर हमारे भारतीयों ने भी कोई कमी नहीं छोड़ी। धर्म के ठेकेदारों ने तो और अधिक दुष्प्रचार किया क्योंकि महाभारत युद्ध के पश्चात् मंत्री-संत्री और पंडित-पुजारी राजा-महाराजाओं की चापलूसी करने लगे थे। यदि राजा मांसाहारी, मद्यपानी हैं तो वह राजा को बताने लगे कि हां वेद में ऐसा ही है। राजा प्रसन्न हो उन्हें धन आदि दिया करता। यदि राजा व्यभिचारी हैं तो पंडित-पुजारी यही कहते कि हां वेद में तो ऐसा ही है।

वेद में पशुबलि, नरबलि का विधान बताने लगे, यज्ञों में मद्य-मांस व पशु की आहुति बताने लगे। गोमेध अश्वमेध का उल्टा अर्थ कर वेद की पवित्रता में पलीता लगा दिया। राजा की पत्नी अश्व द्वारा सहवास बता दिया। यज्ञों में पशुओं की बलि तो चारों ओर चल पड़ी थी। लोग तान्त्रिक कर्मों को अत्यधिक महत्त्व देने लगे थे। जो कार्य वेदविरुद्ध थे, उन्हें कराने लगे। जीवन में सोलह संस्कार होते हैं अर्थात् अन्तिम संस्कार के पश्चात् कोई संस्कार नहीं होता परन्तु पाखण्डियों ने मृतक भोज (तेरहवीं) व मृतक श्राद्ध आदि और कराने आरम्भ कर दिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने मृतक श्राद्ध, मृतक भोज, तांत्रिक कर्म, बलिप्रथा, यज्ञों में पशु व नरबलि, बालविवाह विवाह आदि

कुप्रथाओं का विरोध किया। ईश्वर एक है वही सृष्टि को रचने व चलाने वाला है। इसे छोड़कर लोगों ने अनेक काल्पनिक देवी-देवता बना लिए व उनकी पूजा करने लगे। राम व कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानने लगे। राम कृष्ण की मूर्ति स्थापित कर पूजा करने लगे। इधर उन्हें भगवान मान लिया उधर उनमें दोष भी लगा रहे थे। पुराणों में देवी-देवताओं की काल्पनिक कथा भरी पड़ी हैं। कामुकता व चमत्कार पूर्ण बातें भरी हुई हैं। कृष्ण को दूध-दही चुराने वाला, गोपियों को छेड़ने वाला, मनहार बन चूड़ी पहनाने वाला, नग्न स्नान करती गोपियों के नदी के किनारे रखे वस्त्र हरण करने वाला बताया गया। राम के लिए कहा कि धोबी के कहने से सीता को घर से निकाला और भी अनेक काल्पनिक विषय जोड़ दिए।

महर्षि दयानन्द जी ने बताया कि श्रीकृष्ण जैसा ब्रह्मचारी, चरित्रवान्, योगी पुरुष इतिहास में नहीं मिलता। वह वेद के विद्वान्, कुशल नीतिज्ञ और महान् आत्मा थे। महाभारत युद्ध को रोकने का पूर्ण प्रयास श्रीकृष्ण ने ही किया। उनके चरित्र पर जो कीचड़ उछाली गई है, यह उनके साथ अन्याय है। राम व कृष्ण तो भारत के स्तम्भ हैं, महापुरुष हैं। हमें उनके चित्र का नहीं अपितु चरित्र का पालन अवश्य करना चाहिए। उनका चरित्र अद्वितीय है।

महर्षि ने बताया कि तीन तत्त्व ईश्वर, जीव व प्रकृति अनादि हैं। इनको किसी ने नहीं बताया यह सदैव से हैं। ईश्वर सृष्टि को बनाता रचता चलाता है। प्रलय भी करता है। प्रलय में भौतिक तत्त्व परमाणु रूप में व चहुंओर अन्धकार व्याप्त रहता है। परमात्मा सृष्टि रचकर जीवात्मा को उनके कर्मानुसार फल अवश्य देता है जो जैसे अच्छे व बुरे कर्म करता है फल भी वैसा ही मिलता है। पुराणों में सृष्टि उत्पत्ति की अनेक काल्पनिक कथाएं लिखी हैं।

महर्षि दयानन्द ने स्वराज हेतु भी उद्घोष किया। स्वदेशी का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने मिशनरियों द्वारा संस्कृत व

क्रमशः पृष्ठ 13 पर.....

आत्मा की आवाज

—पं. उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक-गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून, उत्तराखण्ड

ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि में सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों की प्रथम पृथक् रचना की है जो जन्म से मृत्यु तक आकृतियां एक जैसी बनी रहती हैं तथा उन्हीं में से एक मनुष्य जाति का निर्माण भी किया है और जीवित रहने के साधन सबको एक समान बिना भेदभाव के उपलब्ध कराये हैं। अर्थात् मनुष्य की एक जाति मनुष्य जाति बनाई है।

मनुष्य के पूर्वजों ने मनुष्यों की योग्यतानुसार गुण, कर्म के आधार पर वर्णव्यवस्था बिना भेदभाव के बनाई थी। कालान्तर में वर्णव्यवस्था कल्पित जाति व्यवस्था कायम करके मनुष्य जाति को बांट दिया है। आज का लेख इस आवयक विषय पर प्रस्तुत कर रहा हूँ निपक्ष होकर विचार करें।

वर्ण व्यवस्था कर्म से थी तथाकथित जाति से नहीं थी—मानव पूर्व जन्मों के संस्कारों को लेकर पैदा होता है और वर्तमान में संस्कार व स्वभाव से एक विशेष गुण वाला हो जाता है, और उस गुण कर्म को वर्ण 'संज्ञा' दी जाति है। वर्ण अधिक ज्ञान विज्ञान प्राप्त करके बदले जा सकते हैं तथा बदल गये हैं। हमारे ग्रन्थों में इसके अनेक प्रमाण हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों को एक समान पैदा किया है। वैदिक धर्म व वेदों में व्यवस्था थी कि जो जिस-जिस गुणों को लेकर पैदा होता है, राज्य व्यवस्था से उसको वहीं वर्ण मिलता था। जैसे एक पिता की चार सन्तानें हुईं और उनमें से एक पढ़ने में तीव्र बुद्धि उसको ब्रह्मण, दूसरा लड़ने में वीरता उसको क्षत्री, तीसरा व्यापार में तीव्र बुद्धि उसको वैश्य, चतुर्थ सन्तान जो पढ़ने से व समझने से मन्द बुद्धि हैं, उसको शूद्र का वर्ण दिया जाता था। शूद्र घर का कार्य व भोजन आदि बनाया करता था, किन्तु भेदभाव नहीं होता था। इस प्रकार वर्ण गुण कर्मानुसार बदलते रहते थे।

नाम के आगे प्रचलित उपजातिवाचक शब्द की समीक्षा—महाभारत युद्ध के बाद जब वैदिक विद्वान समाप्त हो गये, तब वर्णशंकर सन्तानें पैदा होने लगी और सामाजिक गुण कर्म वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त होने

लगी और गुण कर्म के कार्यों को जाति व्यवस्था बनने लगी और मानव समाज में ऊंच नीच और छुआछूत का व्यवहार होने लगा। सत्योपदेश ब्राह्मणों से संसर्ग न रहने से लोक अव्यवस्था फैल गई। मानव समाज में मूल में पोण्ड्रक, ओड, द्रविड, काम्बोज, यवन, शाक, पारद, पद्दव, चीन, किरात, दरद, खशा आदि के नाम से प्रचलित हुईं और संसार में जहां भी बसी वहीं अपना आधिपत्य जमाकर बैठ गईं। जैसे द्रविड़ भारत के दक्षिण में यवन, शाक, पारद, पश्चिम में जाकर अरब राष्ट्रों को बनाया, इसके लिये प्रमाण और मैं ईरान के भाह अपने नाम से पूर्व (आर्य मिहर) भाब्द लिखते हैं, जिसका अर्थ हैं आर्य कुल का सूर्य इस प्रकार नागा भारत के असम क्षेत्र में जा बसे और विश्व में जहां तहां आबाद हो गये। वह एक युग था विश्व के हर कोने में आर्य निवास करते थे और भारत उनका केन्द्र था। किन्तु स्वार्थी लोगों ने द्रविड़ और आर्यों की अलग-अलग जाति बताकर सदा के लिये भारतीयों के दिलों में दरारे डाल दीं। भारत में प्रचलित जातियों का मूल द्रविड़ और आर्य है इसे ही सब उपजाति फैली हुई है। नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाने से ऊंच-नीच का व्यर्थ भेदभाव पनपता है, जबकि उपजाति का कोई निश्चित आधार नहीं हैं न ही प्राचीन इतिहास मिलता है। जाति वाचक शब्द लगाने वाले मनुष्य को यह भी मालूम नहीं होता कि इस उपजाति नाम का मूल क्या है और कैसे नाम पड़ा बस, पीढ़ी दर पीढ़ी दर पीढ़ी उपनाम लगाना परम्परा बन गई है। गम्भीरता से विचार करें।

जातिवाद से हानियां—उच्च जाति मानने से भेदभाव, ऊंच-नीच व्यवहार से भारतवर्ष में बहुत हानियां हुई हैं तथा कथित छोटी जाति का उच्च जाति वालों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी बंधुवा की तरह शोषण किया गया और शोषित वर्ग को प्रत्येक अधिकारों से वंचित किया गया, इससे दुखी होकर सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिये विधर्मी बन गये। ईसाई व मुसलमान समुदाय में सम्मिलित हो गये। फल स्वरूप भारतवर्ष में आज भी करोड़ों ईसाई व मुसलमानों

के पूर्वज हिन्दू थे। आज के इस वैज्ञानिक वातावरण में भी जाति पाति, छुआछुत का चलन कैसर बना हुआ है। वर्तमान युग में जातिपाति छुआछुत का कोई औचित्य नहीं है।

आज तक जिन व्यवसाय के कारण भिन्न भिन्न जाति जैसे लोहार, टमटा, मिस्त्री, औजी आदि को छोटी जाति का माना जाता था। किन्तु अब उनके व्यवसाय को उच्च वर्ग के लोग करने लगे हैं। अब उच्च वर्ग को भेदभाव समाप्त करने में आगे आना चाहिए। इस विषय पर उदाहरण देना प्रासंगिक होगा। जो इस प्रकार से है। एक दिन रेल के डिब्बे में खादी की टोपी व धोती पहने समाज सुधारक जेपी कृपलानी सफर कर रहे थे और उसी डिब्बे में एक तिलकधारी पण्डित जी भी बैठे थे। श्री जेपी कृपलानी जी ने अपना खाने का टिफन खोला और शिष्टाचार बस उन लिंक धारी पंडित जी से भी भोजन करने को कहा, किन्तु पंडित जी ने कहा महाशय आपकी जाति क्या है। कृपलानी जी मुस्कराने लगे और कुछ सोचकर बोले पंडित जी मेरी एक जाति हो तो बताऊँ। पंडित बोले क्या मतलब है। कृपलानी जी मुस्कराकर बोले प्रातः जब शौचालय जाता हूँ और अपने को साफ करता हूँ उस समय भंगी बन जाता हूँ, दाड़ी बनाते समय नाई, नहाने के बाद वस्त्र धोने से धोबी, पानी भरते समय कहार, हिसाब करते समय वैश्य, विद्यालय पढ़ते समय ब्राह्मण, किसी पर अन्याय को बचाते समय क्षत्रिय बन जाता हूँ। अब आप ही बताइये मैं अपनी कौन-सी जाति बताऊँ। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य जाति को बनाया है। इसलिए मेरी जाति मनुष्य है अब आप ही विचार करें।

ईश्वरकृत जातियाँ-ईश्वर ने करोड़ों प्राणियों की रचना भिन्न-भिन्न शरीरों में रची हैं, जो शरीर जिस प्राणी को दिया है वह जन्म से मृत्यु तक बना रहता है जैसे, गाय, भैंस, बकरी, कबूतर, घोड़ा, गधा, साँप, पशु-पक्षी, बिच्छु आदि शरीरों की अलग-अलग रचना की है। वैसे ही एक जाति मनुष्य की भी बनाई है। जाति उसको कहते हैं, जो जन्म से मृत्यु तक जाति नहीं है। किन्तु शास्त्रों में मानव जाति में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था बनाई है, किन्तु भेदभाव नहीं बनाया है जो हम पहले पैराग्राफ में स्पष्ट कर चुके हैं।

आर्यसमाज संगठन समाज-सुधारक संस्था से निवेदन-आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कथित जाति व्यवस्था को मानव जाति में फूट डालने वाला बनाया है। और वर्ण व्यवस्था पर बल दिया है। आज आर्यसमाज को बने करीब काफ़ी वर्ष हो गये हैं, किन्तु आर्य सदस्य व आर्य नेतृत्व नेतागण, अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाते जा रहे हैं। जो जाति व्यवस्था को और मजबूत कर रहा है। यदि आर्यसमाज संगठन से जुड़े आर्य अपने नाम के आगे जाति वाचक शब्द हटाने में आगे आयें तो मानव समाज को बहुत बड़ा सन्देश जायेगा।

भारतीयों (हिन्दुओं) को जागना ही होगा-

- क) भारत की गुलामी का कारण एक जातिवाद द्वारा आपसी फूट व अलगाव वाद व राष्ट्र की उपेक्षा का कारण रहा है। फिर भी हम भारतीय चेत नहीं रहे हैं।
- ख) भारतवर्ष में करीब कई करोड़ मुसलमान व ईसाई हैं, जिनमें इनके पूर्वज अधिकांश हिन्दू थे। यही अवस्था रही तो कालान्तर में हिन्दू अपने ही देश में अल्पसंख्यक हो सकते हैं। फिर भी चेत नहीं रहे हैं।
- ग) जातिवाद की बीमारी का लाइलाज का कारण वर्तमान राजनीति भी बनी हुई है। जो वोट बैंक के लालच में दिनों-दिन बढ़ रही है। फिर भी हम चेत नहीं रहे हैं।
- घ) हिन्दुओं के धर्मों में पाखण्डी धर्म सम्प्रदाय भारत में दिनों-दिन बढ़ रहे हैं और इनके कारनामे हमारे सामने हैं। फिर भी हम चेत नहीं रहे हैं।
- ङ) ईश्वर ने मानव समुदाय की सुव्यवस्था हेतु वेदों का ज्ञान दिया था, और मानव की सुख शान्ति का मार्ग बताया था, किन्तु भारत में धर्म निरपेक्ष कानून के प्रभाव से बुद्धिजीवी व समाज सुधारक, वर्ग भी धर्म के नाम पर अनेक मत-मतान्तरों को पल्लित होते देखकर भी असहाय होकर रह गये हैं। हम अपने ही देश में धर्म सापेक्ष के बजाए धर्म निरपेक्ष वातावरण पर चिन्तित नहीं हो रहे हैं। चेत नहीं रहे हैं।

नोट-मेरे लेख आर्य पत्रिकाओं के आतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं में भी छपते रहें हैं और प्रबुद्ध पाठकों द्वारा दूरभाष पर समर्थन मिलता रहता है। इस लेख पर भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

स्वास्थ्य-चर्चा....

मधुमेह (Sugar)

दोस्तो, मैं डॉ० सत्यपाल सिंह आर्य आयुर्वेदाचार्य मधुमेह और उसके क्या लक्षण होते हैं, इस बारे में जानकारी देते हैं।



मधुमेह एक आम बीमारी मानी जाने लगी है, लेकिन यह एक भयंकर रोग है। क्योंकि इस बीमारी से सभी शरीर के अंग प्रभावित होते हैं। इसे धीमी गति से मारने वाला रोग भी कहा जाता है। यह रोग ज्यादातर उन लोगों को होता है जो लोग अनियमित आहार लेते हैं। खाने में शक्कर का प्रयोग ज्यादा करते हैं एवं ठण्डी चीजों का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं, जिसके कारण हमारा अग्न्याशय सुचारु रूप से कार्य नहीं करता और धीरे-धीरे उसकी कोशिकायें काम करना बन्द कर देती हैं जिससे Insulin नामक द्रव्य निकलता है। अग्न्याशय को हम (Pancrease) कहते हैं। यह द्रव्य (Insulin) हमारे शरीर में हमारे शुगर को सीमित (Controle) रखता है जब यह बनना बन्द हो जाता है तो उससे यह मधुमेह का रोग हो जाता है। इस रोग को ठीक रखने के लिए एक नुस्खा लिख रहा हूँ, इसे आजमाइए यह एक अचूक नुस्खा है—

चन्द्रकान्ती रस 2 रत्ती, गुड़मार चूर्ण 10 रत्ती, आमलकी चूर्ण 5 रत्ती, जामुन फल मज्जा चूर्ण 5 रत्ती, निम्बपत्र चूर्ण 5 रत्ती, निम्बोली चूर्ण 5 रत्ती। सब मिलाकर तिलकित के रस में साथ मिलाकर आंवले का रस 20 ग्राम पानी ऊपरलिखित नुस्खे की छह गोली बनाना हर रोज सुबह एक गोली आंवले के रस से लेना। सायंकाल में चन्द्रप्रभा वटी 1 गोली, गुड़मार चूर्ण 10 रत्ती, आमलकी चूर्ण 5 रत्ती, निम्बोली चूर्ण 5 रत्ती, जामुन गुठली चूर्ण 5 रत्ती, सब मिलाकर तीन गोली बनावें। सायंकाल ठण्डे पानी से एक गोली सेवन करें।

पथ्य-गेहूँ, यव और चना तीनों मिलाकर आध पाव आटे की रोटी, हरी सब्जियाँ, गूलर आध सेर दूध गाय के दही का छाछ दो मील प्रतिदिन घूमना (टहलना) अनिवार्य है। आपको ईश्वर की कृपा से जरूर लाभ होगा।

महर्षि दयानन्द का पाचक जगन्नाथ से वार्तालाप

टेक-अरे जगन्नाथ तूने यह क्या कर डाला।

दूध में मिला के जहर कर दिया घोटाला ॥

1. दासता विलासिता अज्ञान में सराबोर देश था।
क्या तुम्हें मालूम मेरा काम कितना शेष था।
बड़ी मुश्किलों से इसे भंवर से निकाला ॥
दूध में मिला के..... ॥
2. लग रहा अब तो यह शरीर छूट जाएगा।
वेदभाष्य स्वप्न बीच में ही छूट जाएगा।
सबकी दृष्टियों में यही काम था निराला ॥
दूध में मिला के..... ॥
3. मैं रहूँ या न रहूँ मुझे ज़रा भी गम नहीं।
गम है सिर्फ वेदभाष्य का किसी में दम नहीं।
वेदभाष्य रुक गया तो होगा न उजाला ॥
दूध में मिला के..... ॥
4. ये ले चार सौ रुपया भाग जा नेपाल तू।
देख अपनी जान को न देख मेरा हाल तू।
ज्ञानेन्द्र सभी हसरतों को हमने अब निकाला ॥
दूध में मिला के..... ॥

भेंटकर्ता : भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक) 9416972879

महर्षि के उपकार

असत्य को सत्य और सत्य को असत्य मान,

मानव भ्रमित था समझ नहीं पाता था।

वेदों के अर्थों को उलट-पुलट कर दिया,

कैसी अज्ञानता थी मानव घबराता था।

वेदों को कहने लगे गीत है गड़रियों के,

जिसे जो आता 'सरस' वही गीत गाता था।

देखकर दशा को द्रवित हुए दयानन्द,

सत्य का प्रकाश किया सत्य ज्ञानदाता था।

ऋषि का है उपकार गर आज जीवन है,

जिन्हें रोज प्रातःकाल शीश में झुकाता हूँ।

सन्ध्या-हवन करना हमें कौन सिखलाता,

करके ध्यान ईश्वर का खुश हो जाता हूँ।

आज लोभवश मानव मन भटक रहा,

पाखंडी कहते आओ ईश्वर मैं दिखाता हूँ।

प्रभु दयालु 'सरस' हृदय में विद्यमान,

आत्म-समर्पण कर प्रभु गीत गाता हूँ।

—सुरेन्द्र कुमार 'सरस', रोहतक मो० 9254069111

ओ३म्

योग दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में विगत लगभग दो वर्ष से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेद प्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, एकादशोपनिषद्, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पंचमहायज्ञ विधि व वैशेषिक दर्शन आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन कराया जा रहा है। दिनांक 16 अक्टूबर 2017 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक के द्वारा व्यास भाष्य सहित योग दर्शन का अध्यापन कराया जायेगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता

केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता

न्यूनतम 12 वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं

वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेद भाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घंटे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपातरहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि, वस्तुवें निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता

आचार्य जी,

दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरियाणा) 124001

चलभाष -

आचार्य नवानन्द जी आर्य - 7027026175, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक - 7027026176, श्री निगम मुनि जी - 9355674547

महर्षि दयानन्द सरस्वती... पृष्ठ 8 का शेष....

भारतीय संस्कृति का विरोध होते देख संस्कृत विद्यालय चलाए। मतान्तरण के विरोध में ईसाई व मुस्लिमों की शुद्धि कर आर्यधर्म में प्रवेश कराया। स्वतंत्रता संग्राम की क्रान्ति से भी वह दूर नहीं रहे। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों को भी देखा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 ई० में मुम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की पश्चात् भारत में अनेक सहस्रों आर्यसमाज स्थापित हुए। आर्यसमाज आज भारतवर्ष के कोने-कोने में हैं, जहाँ से वेदज्ञान का प्रकाश चहुँओर निरन्तर हो रहा है यह ऋषि के प्रज्वलित दीप ही हैं। जो आज भारत में ही नहीं अपितु अमेरिका, यूरोप, मोरीशस, सूरीनाम, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, तिब्बत, भूटान आदि देशों में भारत से बाहर भी ज्ञान की ज्योति का प्रकाश कर रहे हैं। यही ऋषि के जगमगाते दीप हैं। स्वयं बुझकर जिन्हें वह ऋषि संसार के उपकारार्थ प्रकाशित कर गया यह दीप संसार भर के लिए है, सुख-शान्ति के लिए है, मानवता के लिए है।

महर्षि संसार के उपकारार्थ उस पावन ज्ञान के सागर वेद के लिए राजा-महाराजाओं, साधु-सन्तों, अन्य मत-मतान्तर वालों, पंडित-पुजारी सबसे मिले, नदियों के किनारे सैकड़ों कोस की यात्रा की, दुर्गम बर्फीले स्थानों, पर्वतों, कन्दराओं, जंगलों में भी गए। सर्वत्र वेद की दुन्दुभि बजाई।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, गोकर्णानिधि, स्वमन्तव्यामन्तय प्रकाश, व्यवहारभानु, सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक ग्रन्थ व पुस्तकें लिखीं। शास्त्रार्थ किये, शुद्धियाँ कीं। उनके उपकारों को शब्दों में समाहित नहीं किया जा सकता।

स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी सर्वाधिक आर्य थे। देश के लिए आर्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्यों की भूमिका थी। अनेक बार ऋषि को विष दिया गया। सन् 1883 की दीपावली के दिन वह ऋषि हमारे मध्य से सदैव के लिए विदा हो गया। वह ऋषि आर्यों के हृदय में सदैव स्मरणीय रहेगा। लाखों चिराग जला वह एक दीप बुझ गया प्रत्येक दीपावली पर ऋषि आर्यों को याद आता है।

भारतीयता में पितृयज्ञ.... पृष्ठ 2 का शेष....

जीवन की विषम परिस्थितियों में भी विवेक और धैर्य पूर्वक अपने जीवन को निखारें।

आजकल इसका नाम श्राद्ध चल पड़ा है जिसका शाब्दिक अर्थ है-श्रत्=सत्य का धा=धारण करना अर्थात् जब अपने पूर्वजों को सत्कार देने की सच्चाई समझ में आ गई तो उसको हर तरह से फिर अपनाना, पालना। इस अवसर पर वही कुछ करना चाहिए जो इस भावना को सफल करे। बेमेल की निरर्थक बातें करना, तो जड़ को सींचने के स्थान पर पत्तों को पानी देना ही कहा जाएगा।

ऐसे मौके पर कुछ कहते हैं कि इसी बहाने से कुछ दान-पुण्य हो जाता है। जब सच्चाई को समझ लिया, दिल में तड़प जाग गई और कुछ करना चाहते हैं तो फिर बहाना क्यों?

वैसे बहाने का एक अर्थ कारण भी है। संसारी जीवन में हम पग-पग पर देखते हैं कि सही कारण से ही कोई कार्य सिरें चढ़ता है। जैसे कि रसोई में सही ढंग से निश्चित चीजों के मिलाने से ही वह-वह पकवान तैयार होता है। न कि कुछ भी कर देने या लेने से। अतः आइये अपने पूज्यों की सेवा करके अर्थात् आपस के सम्बन्धों को ईमानदारी से निभाकर परिवारों को सुखी बनायें।

आइए! अब परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करें कि यजमान परिवार और आगन्तुकों में सेवा, सत्कार की भावना दिन दुगनी तथा रात चौगुनी फूले-फले।

संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

महर्षि दयानन्द का.... पृष्ठ 4 का शेष....

अतः मानव मात्र को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कराना ही उनका उद्देश्य था। उन्होंने स्वयं विधर्मियों से शास्त्रार्थ कर उनके अनुचित विचारों का निर्भीकता से खण्डन किया और प्रत्येक कार्य में लोकहित की भावना रखते हुए स्वयं विषपान करके भी हमें अमृतपान कराया। वस्तुतः असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा अधर्म से धर्म की ओर लोगों को अग्रसर करना ही स्वामी जी का सच्चा धर्म है। ऐसे युगद्रष्टा, युगस्रष्टा और युगप्रवर्तक महर्षि का उदात्त जीवन सबके लिए वन्दनीय और अनुकरणीय है।

समाचार-प्रभाग

हिंदी आन्दोलन से सम्बन्धित पांच सत्याग्रहियों को किया सम्मानित



स्वास्थ्यमन्त्री अनिज विज ने 29 सितम्बर 2017 को जिला कष्ट निवारण समिति पानीपत की बैठक के बाद हिन्दी आन्दोलन से सम्बन्धित पांच सत्याग्रहियों को शॉल व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। इन सम्मानित होने वालों में श्री रामचन्द्र सुपुत्र श्री प्रीतसिंह ग्राम इसरानावासी, श्री रामशरण पाल सुपुत्र मथुरादास निवासी हाउसिंग बोर्ड कालोनी सैक्टर-12, देसराज कॉलोनी निवासी, श्री जगदीशचन्द्र बसु सुपुत्र श्री ब्रह्मानन्द शर्मा, श्री सोमवीर सुपुत्र श्री भागेराम वासी गांव चमराड़ा और कृष्णादेवी पत्नी स्व० रामफल की पुत्री शीला देवी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सम्मानित होनेवालों से उनके स्वास्थ्य के बारे में बात की।

जूडो में पाया गोल्ड

22.09.2017 से 25.09.2017 तक अमृतसर में आयोजित सी.बी.एस.ई. के राज्य स्तरीय खेलों में 60 किलोग्राम से ऊपर भारवर्ग में जूडो खेल में आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत के विद्यार्थी नरेश ने स्वर्णपदक प्राप्त किया। इससे पहले यह विद्यार्थी दो बार राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। अब तीसरी बार यह विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेगा। कार्यकारिणी के प्रधान श्री सत्येन्द्र मलिक, प्रिंसिपल श्रीमती रेखा शर्मा ने विद्यार्थी को राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड जीतने की अग्रिम शुभकामनाएं दीं व 1100/- रुपये की नकद राशि से विद्यार्थी का स्वागत किया। इस अवसर पर डीपीई श्री जगदीश चहल, पीटीआई श्री संदीप आर्य, श्री जितेन्द्र आदि उपस्थित रहे।

आर्यसमाज घरौंडा के रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं ने 103 यूनिट किया रक्तदान

माउंट ऐवरेस्ट पर दो बार भारतीय तिरंगा फहराने वाली पहली भारतीय बेटे ने मुख्य अतिथि के रूप में लिया भाग

घरौंडा, 2 अक्तूबर : विश्व स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य पर आर्यसमाज घरौंडा व आर्य वीर दल घरौंडा द्वारा आर्य समाज भवन घरौंडा में रविवार को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर में कुल 103 यूनिट रक्त लोगों ने स्वैच्छिकता से रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में युवाओं के साथ महिलाओं का भी बोलबाला रहा। रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में माउंट ऐवरेस्ट को दो बार व दो रास्तों से फतेह कर उस पर भारतीय तिरंगा फहराकर पहली भारतीय महिला का गौरव हासिल करने वाली भारत की बेटे अनिता कूंडू ने कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में नपा चेयरमैन सुभाष गुप्ता ने, सम्मानीय अतिथि के रूप में रेडिमेंट गारमैट्स ऐसोसिएशन घरौंडा के अध्यक्ष देवेन्द्र इशपुनियानी ने व विशिष्ट अतिथि के रूप में घरौंडा थाना प्रभारी हरजिन्द सिंह ने व कार्यक्रम में विशेष रूप से भारत स्वाभिमान के प्रदेश प्रभारी संजीव धीमान, पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के योग आचार्य चंदन व अजयदीप आर्य ने भाग लेकर, रक्तदाताओं को बैज लगाकर व प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया। रक्तदान शिविर में भारत स्वाभिमान, पतंजलि योग समिति व युवाओं द्वारा विशेष सहयोग दिया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अनिता कूंडू ने समारोह में शामिल रक्तदाताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि घरौंडा आर्यसमाज वास्तव में मानवतावादी व राष्ट्रवादी कार्य कर रहा है। इसके लिए जितनी तारीफ की जाए कम होगी। उन्होंने कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है। मैंने जीवन में स्वयं अनेक कठिनाइयां देखी हैं, लेकिन अच्छे लोग अपने अच्छे विचारों से विपरित परिस्थिति पर काबू पाकर आगे बढ़ जाते हैं। अनिता कूंडू ने कहा कि यह रक्तदान न जाने आगे चलकर कितने लोगों की जान बचाने का काम करेगा। इसलिए इससे पुण्य का कार्य तो हो ही नहीं सकता। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अनिता कूंडू, भारत स्वाभिमान के प्रदेश प्रभारी

संजीव धीमान व अजयदीप आर्य ने भी रक्तदान किया। इस अवसर पर रैडक्रास से एम.सी. धीमान, आर्यसमाज प्रधान रणधीर शास्त्री, संरक्षक सुभाष आर्य, महामंत्री दिलबाग आर्य, रमेश राणा, जगदेव शेखपुरा, प्रमाल खेंची, मुरुस्लीन चौहान, रिकू राणा, संजीव वैदिक, देव धीमान, महेन्द्र जागड़ा, नरेश सैनी, अरुण कुमार, मंगल सिंह, महिपाल फोर, महेन्द्र सोनी, जयप्रकाश, राजपाल, रणजीत शास्त्री, रामफल सैनी, पुष्पा नारंग, सीमा शर्मा, राधा सलूजा, सुभाष राणा, शीशपाल लाठर, कर्मवीर सहित अन्य मौजूद रहे।

आय डबल करने का एकमात्र विकल्प है प्राकृतिक कृषि : देवव्रत

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने तथा किसानों से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर गंभीरता जरूरी है। शून्य लागत प्राकृतिक कृषि किसानों की आय डबल करने का एकमात्र विकल्प है, जिसे अपनाया सरल ही नहीं बल्कि लाभप्रद है।

राज्यपाल आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा ब्रह्माकुमारी-विश्वशान्ति धाम में आयोजित 'प्राकृतिक एवं शाश्वत यौगिक खेती' विषय पर आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

राज्यपाल ने कहा कि लगभग 30 वर्ष पूर्व हरित क्रांति के नाम पर रासायनिक खादों का उपयोग शुरू किया गया, जो समय की मांग भी थी। लेकिन, इसके अंधाधुंध उपयोग ने जमीन को बंजर कर दिया है और स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा असर पड़ा है तथा कई जानलेवा रोग सामने आए हैं। हालत यह है कि एक एकड़ में गेहूं की पैदावार के लिए पांच-पांच बैग यूरिया के डाले जा रहे हैं। पानी का जल स्तर घट रहा है। कीटनाशक को हम अन्न के साथ ले रहे हैं, जो 'स्लो पायेज़न' का कार्य कर रहा है।

आचार्य देवव्रत ने कहा कि भावी पीढ़ी को उर्वरा जमीन देने तथा स्वस्थ समाज की रचना के लिए हमें शून्य लागत प्राकृतिक कृषि को अपनाया चाहिए। उन्होंने कहा कि जैविक और प्राकृतिक कृषि में काफी अंतर है, जिसे किसानों को समझने की जरूरत है। जैविक प्रोडक्ट के नाम पर दुकानें व उद्योग चल रही हैं और उत्पाद कई गुणा महंगे हैं। जबकि शून्य लागत प्राकृतिक कृषि के तहत एक

भी पैसा खर्च नहीं करना पड़ता है। देसी नसल की गाय का पालन कर एक गाय से 30 एकड़ जमीन में कृषि की जा सकती है। उन्होंने कहा कि एक ग्राम गाय के गोबर में 300 से 500 करोड़ जीवाणु होते हैं, जो जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में सहायक हैं। इसी तरह गौमूत्र में लाभप्रद है। इसके उपयोग से जमीन के लिए लाभदायक केंचुए भी पुनः कार्य करना शुरू कर देंगे। इस पद्धति को लेकर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी तथा कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में व्यवहारिक रूप से इसे सफलतापूर्वक अपनाया गया है।

उन्होंने ब्रह्माकुमारी-विश्व शान्ति धाम द्वारा आध्यात्मिक चिंतन के साथ-साथ किसानों के प्रति चिंता जाहिर करने तथा कार्यक्रम आयोजित करने के प्रयासों की सराहना की।

इससे पूर्व, राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी राज बहन तथा राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी सरोज बहन ने राज्यपाल का स्वागत किया। कृषि विशेषज्ञ केंद्र, कुरुक्षेत्र के संयोजक डॉ. हरिओम तथा कृषि विशेषज्ञ डॉ. वजीर सिंह ने प्राकृतिक एवं शाश्वत यौगिक खेती की विस्तृत जानकारी दी।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन 'आर्य प्रतिनिधि' के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है, उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। 'आर्य प्रतिनिधि' का वार्षिक शुल्क मात्र 200/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 2000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक 'आर्य प्रतिनिधि' के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा।

व्यवस्थापक—'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक,

दयानन्दमठ, रोहतक

मो० 7206865945, 8901387993

महाशय घनश्याम आर्य का निधन

दिनांक 09.10.2017 को आर्यसमाज गांधरा जिला रोहतक के यशस्वी प्रधान, पं० नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक के सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ० जगदेव विद्यालंकार के श्वसुर, दिल्ली पुलिस के एस.आई. वेदपाल मलिक के पिता श्री घनश्याम आर्य का हृदयाघात से देहान्त हो गया। वे 82 वर्ष के थे। आठवीं कक्षा तक पढ़े हुए वे एक साधारण किसान थे। सन् 1955 में यज्ञोपवीत लेकर महाशय जी आर्यसमाजी बने थे। 1957 में हिन्दीरक्षा आन्दोलन में भाग लेकर तीन महीने सेंट्रल जेल अम्बाला में रहे। संस्कारविधि, व्यवहारभानु, गोकर्णानिधि, पंचमहायज्ञविधि आदि महर्षि दयानन्द की रचनाओं का अध्ययन कर उनके सिद्धान्तों को पूर्णरूप से अपने जीवन में धारण किया। वे मन, वचन और कर्म से सच्चे आर्य थे। गांव और आसपास के देहात में यज्ञों द्वारा एवं विवाह संस्कार द्वारा निःस्वार्थ सेवा करते थे। सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ के पृष्ठ कण्ठस्थ थे। बड़े-बड़े विद्वान् भी उनसे बात करके अचम्बित और अभिभूत हो जाते थे। वे दयानन्द के सच्चे सिपाही थे। वे यह मानते थे कि महर्षि दयानन्द जी ने सभी सामाजिक और आध्यात्मिक समस्याओं का उत्तर अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में दिया है। वे कहते थे कोई भी प्रश्न करो मैं उसका उत्तर सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से दूंगा। दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश को तो उन्होंने अपने जीवन में जिया था। इस अवसर पर हम परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति देने की प्रार्थना करते हैं और उनके जीवन से कुछ आर्यत्व को ग्रहण करने का संकल्प करते हैं। वस्तुतः उनका जीवन वन्दनीय एवं अनुकरणीय था।

—सुभाष सांगवान, वेदप्रचार मण्डल, रोहतक



बृहद यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न

7, 8, 9 जुलाई 2017 को भऊ आर्यपुर रोहतक में बृहद यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बृहद यज्ञ किया गया। वोरस जोहड़ पर शुद्ध देशी घी का भण्डारा अन्तिम दिन हुआ। गांव के गणमान्य युवा, सभी यज्ञ में सम्मिलित हुए। आचार्य जी ने युवाओं को जनेऊ प्रदान किये। गांव के अनेक युवा यज्ञ, संध्या व साधना से जुड़े हैं।

एक मण घी का यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 5.10.2017 को भऊ आर्यपुर रोहतक में एक मण घी का बृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में 16 यज्ञमान व आर्य दम्पति ने यज्ञ में सम्मिलित हुए। श्रीमती उशा शास्त्री व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुलदीप आर्य द्वारा वेदप्रचार हुआ। कार्यक्रम में युवा, स्त्री, पुरुष सम्मिलित हुए। यज्ञ का सुन्दर आयोजन श्री हवासिंह आर्य ने किया।

—कुलदीप भजनोपदेशक

20वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

4 से 6 नवम्बर 2017 नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में होगा। कृपया अभी से मित्रों तथा परिवारजनों का रिजर्वेशन करा लें तथा सुव्यवस्था हेतु सूचित करें।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 09314535379

जगाधरी वर्कशाप आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

दिनांक 27, 28 व 29 अक्टूबर 2017 को आर्य समाज, जगाधरी वर्कशाप का वार्षिकोत्सव धूमधाम व हर्षपूर्वक मनाया जा रहा है। इसमें प्रसिद्ध विद्वान, उपदेशक व भजनीक पधार रहे हैं।

—बृजेश आर्य, मंत्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

- | | |
|-----------------------------------|----------------------|
| 2. आर्यसमाज तिलक नगर (रोहतक) | 14 से 15 अक्टू० 2017 |
| 3. गुरुकुल लाडौत (रोहतक) | 15 अक्टू० 2017 |
| 4. आर्यसमाज बसई (गुरुग्राम) | 27 से 29 अक्टू० 2017 |
| 5. आर्यसमाज सैक्टर-3, फरीदाबाद | 2 से 4 नव० 2017 |
| 6. आर्यसमाज धनौदा (महेन्द्रगढ़) | 1 से 3 दिस० 2017 |
- (वेद पारायण यज्ञ) —रमेश आर्य, सभा वेदप्रचारालय



सभा प्रधान, मंत्री, प्रस्ताता, कोषाध्यक्ष व अन्य जिला महेन्द्रगढ़ को वेद प्रचार रथ की चाबी भेंट करते हुए।



सभाप्रधान का पगड़ी पहनाकर सम्मानित करते हुए जिला महेन्द्रगढ़ के पदाधिकारी।



मंच पर अस्थित सभा व आर्य समाज के पदाधिकारी।



आर्य महासम्मेलन महेन्द्रगढ़ को संबोधित करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।



आर्य महासम्मेलन महेन्द्रगढ़ में सभा प्रधान को सम्मानित करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी।



आर्य महासम्मेलन महेन्द्रगढ़ में सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य को सम्मानित करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी।



सभा प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष, वेदप्रचार अधिष्ठाता व अंतरंग सदस्य जिला सिरसा को वेद प्रचार रथ की चाबी देते हुए।



जनसभा को संबोधित करते हुए सभा प्रधान।

ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक की ओर से आप सभी को
महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस

पर महर्षि का पुण्य स्मरण करते हुए
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

सामवेद

अथर्ववेद

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री

1

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा